शिक्षाविद् एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता

सुफलता *(The Right Way of Succeeding)* की स्थापना किया। इसके अंतर्गत एक अच्छे समाज की स्थापना के लिए सफलता से ज्यादा सुफलता पर जोर दिया जाता है।

LIVE TO LEARN

(The Way To Glorify Yourself)

कार्यक्रम का संचालन किया। इस कार्यक्रम में:-|

1. How to be POSITIVE?

2. How to think CREATIVELY?

3. How to nurture TALENT?

जैसे मुद्दो पर व्यख्यान दिये जाते हैं। इस प्रोग्राम का प्रतिभाग शूल्क 1₹ है।

बौद्धिक सम्पदा विकास मंच

(The Right Place To Nurture The Talent)

कि स्थापना किया। इसके अंतर्गत केदारघाटी के ऊखीमठ, गुप्तकाशी, भीरी, अगस्त्यमुनी, चन्द्रापुरी, कण्डारा, नागजगई व बसुकेदार में करीब 500 छात्र-छात्राओं को अंग्रेजी बोलने, प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी, तर्कशक्ति, तेज मेमोरी तथा सामान्य ज्ञान का प्रशिक्षण दिया गया।

तेज मेमोरी एवं प्रतिभा विकास पर कार्यक्रोमो का आयोजन : -

1) जवाहर नवोदय विद्यालय, जाखधार (रूद्रप्रयाग) तथा पोखाल (टी0 गढ़वाल)

2) हाई स्कूल, कालीमठ

3) केन्द्रीय विद्यालय, अगस्त्यमुनी

4) रा0 इ0 का0 बसुकेदार, गुप्तकाशी, ऊखीमठ एवं कण्डारा

5) पी0 जी0 कॉलेज अगस्त्यमुनी

6) चिल्ड्रेन एकेडमी अगस्त्यमुनी

7) विद्या मंदिर बेलनी, रूद्रप्रयाग

8) डॉ0 जैक्सवीन नेशनल विद्यालय भैंसारी, गुप्तकाशी

9) फार्मेसी कॉलेज विद्यापीठ, गुप्तकाशी

10) राव एवं एकलव्य जैसा संस्थान, दिल्ली तथा देहरादून मे हुआ, जिनमें करीब 4000 छात्र-छात्राओं को लाभ मिला।

प्लास्टिक हटाओ अभियान के तहत 5 कुन्तल प्लास्टिक इकट्ठा कर नष्ट किया गया।

केदारघाटी के गॉवों में बौद्धिक सम्पदा के स्थिति पर सर्वे किया गया।

नारी जागृति अभियान

(विकसित नारी मतलब विकसित समाज)

का आयोजन किया गया।

सुफलता के तहत दिल्ली, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रो में प्रतिभा विकास के लिए कार्यक्रमों काम का आयोजन किया।

सामाजिक जाग्रिति के लिए कई बार प्रेस वार्ता का आयोजन कर के प्रेस के मदद से इन सुफल कार्यक्रमो को आगे बढ़ाया।

गीता एकेडमी

(Revolutionizing Education)

की स्थापना किया। इसके अंतर्गत 5 विद्यार्थियों ने ई0, 2 विद्यार्थियों ने डा0, 15 विद्यार्थियों ने पो0 व फार्मेसी, व 10 विद्यार्थियों ने बीएड किया तथा करीब 300 विद्यार्थियों ने गणित, भौतिकी, रसायन व अंग्रेजी विषयों में मदद लेकर उच्च शिक्षा प्राप्त किया। यहॉ कुछ विद्यार्थियों ने 10वीं व 12वीं बोर्ड परीक्षा में 100 में से 99, 98 या 96 अंक भी प्राप्त किये हैं। 2015 उत्तराखण्ड में 20वीं स्थान भी एक विद्यार्थी ने प्राप्त किया।

ई-मेमोरी के तहत दिल्ली, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, झारखण्ड व बिहार करीब 500 विद्यार्थियों ने मेमोरी का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा 5000 विद्यार्थियों को मेमोरी विकास के तरीके बतलाये गये। एल एण्ड टी तथा अन्य सार्वजनिक कार्यक्रमों के माध्यम से करीब 150 डॉक्टर, इंजिनियर, प्रधानाध्यापक इत्यादि को वृहद व लघु मेमोरी विकास का प्रशिक्षण दिया गया।

एक प्रयोगधर्मी एवं खोजी के रूप में

1) ***लेमैन थ्योरी का प्रतिपादन***:- इस सिद्धान्त को सीखने से कठिन-से-कठिन विषय को सरलता से समझा जा सकता है। यही कारण है कि कमजोर-कमजोर विद्यार्थी भी यदि समर्पित होकर लेमैन थ्योरी के अनुसार पढ़ाई करता है तो उसे आश्चर्यजनक रूप से अच्छे परीक्षा परिणाम

मिलते हैं। हालांकि पहले इनके दोस्तों ने लेमैन शब्द के कारण इनका काफी मजाक बनाया था क्योंकि लेमैन का अर्थ अनजान भी होता है।

2) ***मजदूरी***:- भीरी क्षेत्र में तीन माह तक मजदूरी करके मेहनत-मजदूरी करने वाले गरीबों के वास्तविक दर्द (शारीरिक तथा मानसिक पीड़ा) को महसूस किया। इनके मजदूरी करने से मजदूरी करने वाले लोगों के अंदर आत्मबल का विकास हुआ तथा कुछ बडी कक्षाओं के विद्यार्थी भी छुट्टियों में गर्व के साथ मजदूरी करके समय का सदुपयोग तथा परिवार को आर्थिक मदद करने लगे।

3) ***पर्यावरण संवर्धन के लिए साइकिलींग***:- प्रतिदिन भीरी से चन्द्रापुरी व पुन: वापसी के बाद भीरी से गुप्तकाशी साइकिल से जाते थे। लोगों के बड़ा आश्चर्य होता था तथा उन दिनों साइकिल रखना एक शौख भी बन गया था।

4) ***केदारघाटी में ट्रैकिंग***:- कार्तिकस्वामी, रूद्रनाथ, मद्महेश्वर, केदारनाथ, त्रियुगीनारायण, भविष्य बद्री, कलपेश्वर (उर्गम घाटी) तथा तुंगनाथ की यात्रा।

5) ***शैक्षणिक कार्यक्रमों के लिए पैदल यात्रा***:- भीरी से ऊखीमठ एवं ऊखीमठ से भीरी 2 माह तक पैदल यात्रा।

कई बार जाखधार से भीरी।

भीरी से बसुकेदार एवं वापस बसुकेदार से चन्द्रापुरी कि यात्रा 2 माह तक।

6) ***भगवान के लिए जीवन सबसे लम्बी यात्रा***:- दिल्ली से बांसवाणा लगभग 500 कि0मी0 11 दिनों में पैदल यात्रा।

एक लेखक के रूप में

झारखण्ड, हरियाणा व उत्तराखण्ड के दैनिक समाचार पत्रों में तेज मेमोरी, सामाजिक सोच तथा पढ़ाई पर लेख प्रकाशित।

एक सन्यासी के रूप में

सन् 2005 में 10 बजे रात्री में दिल्ली में सब कुछ छोड़कर भगवान की खोज के लिये हिमालय की यात्रा प्रारंभ किया।

इस यात्रा में उस व्यक्ति के रूप में रहे जिसके पास रोटी, कपड़ा व मकान नहीं है।

सड़क के किनारे व खेतों के बीच सोये एवं बिना भोजन के कई रात गुजारी।

त्रिवेणीघाट,(ऋषिकेश) पर 2 बजे रात्री में ठंढ़ साधु-महात्माओं से मद्द मांगी तो उन्होने चोर जानकर पुलिस के हवाले कर दिया। उस पुलिसवाले ने इन्हें अपना पुराना कम्बल सिलकर दिया।

भिखारियों के बीच बैठकर भोजन किया तो पाया कि उनके अन्दर भी एक राजा के तरह का अकड़ (रजोगुण) विद्यमान है।

रात्री के समय मुसलाधार बारिश से बचने के लिये, जानवरों के तरह रहे व किसी तरह कीचड़ से होकर एक छोटी झोपड़ी में शरण पायी।

एक साधक के रूप में

(भगवान का खोजी)

6 माह तक प्रत्येक दिन 108 बार हनुमान चालिसा का पाठ किया।

3 माह तक लगातार दुर्गा सप्तसती का पाठ किया।

6 माह तक गायित्री का जाप के साथ -साथ हवन किया।

3 माह तक तक मौन रहे।

7 दिनों तक मौन के साथ-साथ अंधे के रूप में रहे।

6 माह तक भगवान बुद्ध द्वारा प्रतिपादित विपासना का अभ्यास किया।

6 माह तक ओशो द्वारा प्रतिपादित सक्रिय ध्यान का सुबह में तथा कुण्लीनी ध्यान का लगातार अभ्यास किया।

6 माह तक भगवान महावीर द्वारा चलाये गये 365 पाखण्ड मतो में से एक सोते समय मौत का अनुभव का अभ्यास सोने से पहले किया।

6 माह तक तांत्रिकों के साथ रह कर उनके द्वारा किये जा रहे कार्यो को सीखा।

108 दिनों तक गीता कुटीर बांसवाडा मे रह कर कठोर तपस्या की।

1 वर्ष तक महर्षि महेश योगी द्वारा प्रतिपादित अनुभवातित ध्यान का अभ्यास किया।

1 वर्ष तक स्वामी विवेकानंद द्वारा लिखी पुस्तक राजयोक के आधार पर साधना की।

2 वर्षों तक सदाफल जी महाराज द्वारा प्रतिपादित विहंगम योग के अनुसार बिना प्याज व लहसुन के व नियमित रूप से उनको भोग लगाकर खाना खाया तथा साधना की।

उत्तराखण्ड़ के चार धामों (पंच-बदरी, पंच-केदार, गंगोत्री व यमुनत्री) की यात्रा की।

5 वर्षों तक ऊँ मंत्र का हमेशा जाप किया।

एक विद्यार्थी के रूप में

संस्कृत विद्यालय से मध्यमा (10वीं) किया। गणित तथा जीव विज्ञान से 12वीं किया। स्नातक - बी0 कॉम0 (आनर्स), 75% अंक से किया। चार्टर एकाउन्टेन्ट (इन्टरमीडीएट) किया। अपनी सुफलता के लिए संघर्ष को अंतिम रूप देते हुए, वर्तमान में गीता एकेडमी भीरी में कुछ प्रतिभावान विद्यार्थियों को अंग्रेजी, गणित, भौतिकी, रसायन तथा सा0 विज्ञान का प्रशिक्षण भी देते हुए स्वयं सी0 ए0 (फाइनल) की तैयारी भी कर रहे हैं।

अब तक किये गये संघर्षों का निष्कर्ष

आध्यात्मिक:- आज से लगभग 600 वर्ष पहले इस धरती के पवित्रतम् पुण्यमय भूमि भारत के काशीनगर में कमल के फूल पर उतरे परम अक्षर ब्रह्म कबीर साहेब ही पूर्ण परमात्मा हैं। जिनकी महिमा का वर्णन पवित्र चारो वेदों, पवित्र कुरानशरीफ एवं पवित्र श्रीगुरुग्रन्थसाहिबजी में नाम के साथ स्पष्ट रूप से है। इनको पाने के लिए श्रीमद्भागवतगीता के अध्याय 4 के श्लोक न0 34 में वर्णित तत्वदर्शीसंत हमारे परम श्रधेय तथा परम पूज्य सतगुरू रामपालजी महाराजजी हैं।

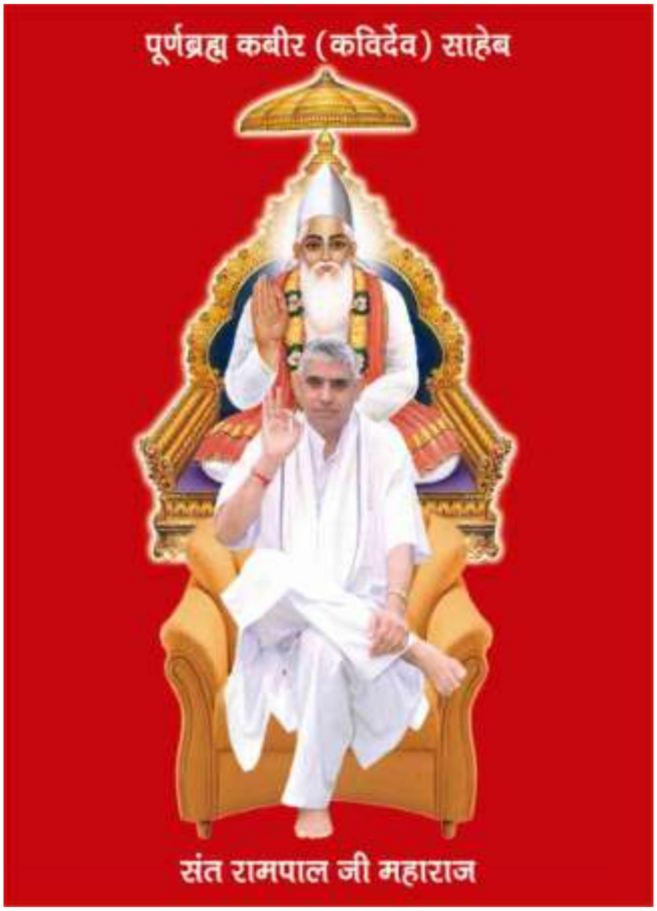

शैक्षणिक:- हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति सक्षम है विद्यार्थियों में प्रतिभा उत्पन्न करने के लिए और वर्तमान समस्या का हल केवल पढ़ाई के समय को व्यवस्थित करने से हो सकता है क्योंकि जो 40 मिनट की एक पिरियड़ बनी है वह अंग्रेजों ने कलर्क बनाने के लिए प्रारम्भ किया था। यही कारण है कि वर्तमान में विद्यार्थियों को सभी विषयों का थोड़ा-थोड़ा ज्ञान करवाकर 33% अंक पर उत्तीर्ण किया जाता है।

सामाजिक:- हमें एक बार पुन: गॉंधीजी जैसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जो जमीन पर हों एवं सच्चे हृदय से हमारा मार्गदर्शन कर हमें हमारी बुलन्दियों तक ले जायें।

आगे की योजना

प्रथम चरण में, उत्तराखण्ड के प्रत्येक इण्टर कॉलेज में तेज मेमोरी, एकाग्रता, अच्छे अंक, प्रतिभा विकास इत्यादी अतिआवश्क विषयों पर व्याख्यान तथा लागत मूल्य पर तेज मेमोरी जैसी पुस्तकों का वितरण होगा।

द्वितीय चरण में, वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को एक नयी दिशा देने के लिए भिन्न-भिन्न राज्यों में विभिन्न स्थानों पर यथोचित क्रार्यक्रमों का आयोजन करना।

एक आश्चर्यजनक सत्य

10 वर्षों तक इतनी प्रतिभा होने के बावजूद भीरी (एक छोटे से बाजार) में लगातार केन्द्र बनाकर अनुसंधात्मक कार्य किया।

यह एक ***प्रयोगधर्मिकता एवं धैर्य की मिशाल*** है, क्योंकि अब गॉव व पहाड़ से लोग पलायन करते रहते हैं। दूसरी तरफ दिल्ली छोड़कर यहॉ आना और एक स्थान को केन्द्र बना लम्बें समय तक कार्य करना सच में एक असम्भव सा कार्य है।

"A small body of

determined spirits

fired by

unquenchable faith

in their mission

can alter the course of history"

- M. K. GANDHI, Sirsa, now in Haryana State